कोलकाता पुस्तक मेले में हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र द्वारा परिचर्चा आयोजित

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र द्वारा कोलकाता पुस्तक मेले में 'डिजिटल समय में किताबें' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। यह आयोजन केंद्र की संस्था 'कोलकाता हिंदी संवाद' की तरफ से किया गया। सबसे पहले केंद्र के विद्यार्थियों-शोधार्थियों और प्राध्यापकों ने केंद्र प्रभारी डॉ सुनील कुमार 'सुमन' के नेतृत्व में विश्वविद्यालय के बैनर के साथ पुस्तक मेले का भ्रमण किया और लोगों को हिंदी विश्वविद्यालय के बारे में बताया। उसके बाद वाणी प्रकाशन के स्टॉल पर परिचर्चा आयोजित हुई। इसकी शुरुआत करते हुए शोधार्थी अजय कुमार सिंह ने कहा कि इंटरनेट के आने से लेखक व प्रकाशक को अंतरराष्ट्रीय पाठक मिले हैं और इससे किताबों की

प्रासंगिकता भी बढ़ी है। शोधार्थी संदीप कुमार दुबे ने कहा कि डिजिटलीकरण ने जहाँ-जहाँ हस्तक्षेप किया है, उन चीजों का प्रचार ही हुआ है। इसके चलते कम व्यय में पाठक चीजों को पढ़ रहे हैं, वहीं किताबों का बढ़ता मूल्य इसके स्वयं के विकास में अवरोध का कारण है। महाराजा श्रीशचंद्र कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष एवं युवा लेखक-आलोचक डॉ कार्तिक चौधरी ने डिजिटल प्रगति को शोध के लिए क्रांतिकारी बताते हुए कहा कि इससे साहित्यिक चोरी रुकेगी और दूर-दराज के शोधार्थी भी इसका लाभ ले पाएंगे। अँग्रेजी अध्यापिका पूजा गौतम ने कहा कि छपी हुई पुस्तकें और डिजिटल पुस्तकें एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों की भूमिका जरूरी है। काज़ी नज़रूल विश्वविद्यालय, आसनसोल की हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ प्रतिमा प्रसाद ने भी डिजिटलाइजेशन को ज्ञान-विज्ञान के लिए सकारात्मक बताया। नंदिनी, चंद्रमणि, श्रीप्रकाश पाल,

आलोक मिश्रा और शुभम सिंह ने डिजिटल समय में किताबों के महत्व को रेखांकित करते हुए

इसके सभी पक्षों पर अपने विचार रखे। इस परिचर्चा में बबलू चौधरी, काजल शर्मा, सागर, सुजीता शर्मा समेत 'सदीनामा' की उपसंपादक मीनाक्षी सांगानेरिया ने भी अपनी बात रखी। केंद्र के प्रभारी डॉ सुनील कुमार 'सुमन' अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि डिजिटल समय ने

हमारा काम आसान किया है और यह किताबों के महत्व को कम नहीं कर रहा है बल्कि पठनीयता को बढ़ा रहा है। हमें पुस्तक संस्कृति को जीवित रखना होगा और तकनीक का इस्तेमाल भी सबके लिए सुलभ करना होगा। इस कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी चाँदनी कुमारी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन वाणी प्रकाशन के स्थानीय संचालक चन्दन चौधरी ने किया।